ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव

Impact of Globalization in India

Paper Submission: 16/09/2020, Date of Acceptance: 28/09/2020, Date of Publication: 29/08/2020

सावित्री
शोध छात्रा,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजऋषि, भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर,
राजस्थान, भारत

सारांश

वैश्वीकरण से अभिप्राय एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें किसी भी देश की अर्थ व्यवस्था को विश्व की अन्य अर्थव्यवस्थाओं से विदेशी व्यापार एवं विदेशी निवेश द्वारा जोड़ा जाता है। इसमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वैश्वीकरण से विश्व का कोई भी देश अछुता नहीं बचा है। वैश्वीकरण के कुछ नकारात्मक पहलु भी है परन्तु वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव अधिक नजर आते है। वैश्वीकरण ने हमारे समाज को ना केवल आर्थिक रूप से प्रभावित किया है बल्कि राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी पहलुओं को प्रभावित किया है।

वैश्वीकरण प्राचीन समय से चला आ रहा है और आगे भी चलता रहेगा। यह एक ऐसी सच्चाई है जिससे हम मुँह नही मोड़ सकते । वैश्वीकरण से नुकसान के साथ फायदे भी हुऐ हैं। अगर ऐसा कहा जाए की वैश्वीकरण से फायदे ज्यादा हुए है तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी । अब ऐसी नीतियॉ बनाने की आवश्यकता है। जिससे वैश्वीकरण का फायदा आम आदमी तक पहुँच सके । 1990–91 में भारत की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय थी। 1991 के दौरान विदेशी ऋण के कारण भारत के सामने एक आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया तथा सरकार विदेशो से लिए गए उधार के पुर्नभुगतान की स्थिति में नही थी। विदेशी व्यापार खाते में घाटा बढ़ता जा रहा था।

Globalization refers to a process in which the economy of any country is linked to other economies of the world by foreign trade and foreign investment. Multinational companies play an important role in this. No country in the world has remained untouched by globalization. There are some negative aspects of globalization, but the positive effects of globalization are more visible. Globalization has not only affected our society economically but all aspects of political, social, cultural.

Globalization has been going on since ancient times and will continue to happen. This is a truth from which we cannot turn our face. Globalization has advantages along with disadvantages. If it is said that there are more benefits than globalization, then there will be no exaggeration. Now there is a need to create such policies. So that the benefit of globalization can reach the common man. India's economic situation was very pathetic in 1990-91. During 1991 an economic crisis arose due to foreign debt and the government was not in a position to repay the borrowings from abroad. The deficit in the foreign trade account was increasing.

मुख्य शब्द : हस्तान्तरित, समृद्धि, नकारात्मक, बहुराष्ट्रीय कम्पनीयो, साम्राज्यवाद, सांस्कृति, सहस्त्रीकरण, पर्यावरण, मौलिक, उपमाद्वीपो, शीतयद्ध, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा, टैक्नोलोजी।

Transfer, Prosperity, Negative, Multinational Companies, Imperialism, Culture, Millennium, Environment, Fundamental, Upadvipo, Cold, International Currency, Technology.

प्रस्तावना

वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग आज आम हो गया है। आज विश्व में किसी भी प्रकार के परिवर्तन को वैश्वीकरण के सन्दर्भ में देखा जाता है। विश्व की सिकुडन, विश्व की एकमत्ता, नये अर्न्तसम्बन्धों का विकास तथा आधुनिकीकरण के नये आयाम आदि के स्वरूप को वैश्वीकरण की प्रक्रिया कहा जाता है। वैश्वीकरण को वैश्विक समाज के रूप में देखा जाता है, जिसका निहितार्थ सम्पूर्ण विश्व को एक समाज, एक ग्राम माना जाता है। वैश्वीकरण वैश्विक समाज में परिवर्तनों का सूचक है। वैश्वीकरण प्रारम्भिक रूप में आर्थिक संदर्भ में देखा जाता था, लेकिन अब यह मात्र आर्थिक ही नही वरन् सामाजिक,

राजनैतिक, प्रर्यावरणीय, जनसंख्या, प्रवास, शिक्षा और सास्कृतिक मुद्दो में भी देखा जा रहा है। वैश्वीकरण की अवधारणा बहुत पुरानी नही है इसका उदय 1990 के दशक में हुआ है वैश्विक समाज की अन्तःनिर्भरता सामाजिक तथा आर्थिक आधार पर है। वैश्वीकरण से तात्पर्य केवल स्थानीय संस्कृति को वैश्विक संस्कृति से जोड़ना मात्र नही है अपितु स्थानीय संस्कृति की स्थानियता को मूल रूप से बनाये रखना है। भारत में वैश्वीकरण अन्य देशों की तरह कई दशक पुराना है। यह सोचने व मूल्याकंन करने की बात है कि आर्थिक उदारीकण व वैश्वीकरण ने हमारी समस्याओं का हल कहाँ तक निकाला है। वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण ने स्थानीय धन्धों को तथा स्वदेशी उत्पादन को बहुत ठेस पहुचाई है। भारत की स्थानीय संस्कृति विशिष्ठ है जिसे वैश्वीकरण ने प्रभावित किया है । भारतीय मानव शास्त्री सर्वेक्षण में ''भारत के लोग'' प्रोजेक्ट के माध्यम से स्थानीय संस्कृति के तथ्य जुटाये है और यह तथ्य स्थापित किया कि भारतीय समाज बहुलवादी है। इसे विविधता व एकता के रूप में देखा जा सकता है जो स्थानीय संस्कृति की पहचान है।

वैश्वीकरण का इतिहास और प्रकृति

ईसा पूर्व से ही भारत अपने ज्ञान विज्ञान, दर्शन तथा अति सम्पन्न अर्थव्यवस्था के कारण विश्वविख्यात रहा है। 2000 वर्ष पहले विश्व के सकल घरेलू उत्पाद (जी0डी0पी0) का लगभग 25.9 प्रतिशत हिस्सा भारत का था तथा इसकी जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत थी । अति प्राचीन काल से ही भारत में निर्मित सामान विश्व के विभिन्न भागों में दूर दूर तक निर्यात किये जाते थे। अतः वैश्वीकरण की संकल्पना भारत के लिए कोई नई बात नही है, ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' (पूरी धरती ही अपना परिवार है) का विचार यहॉ अनादि काल से प्रचलित है।

उदारीकरण और वैश्वीकरण की प्रक्रिया व अवधारणा भारत के पौराणिक युग की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा पर आधारित है। वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समूचे विश्व में व्यापार का आगत और निर्गत किया जाता है। विश्व व्यापार की मॉग और पूर्ति उनके आयात और निर्यात की नीति पर आधारित होती है। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का संयोजन है। इस प्रकार उदारीकरण और वैश्वीकरण विश्व–व्यापार में एक खुली प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करते है इसलिए भारत में भी उदारीकरण और वैश्वीकरण की प्रक्रिया को अपनाया गया जिसके तहत 24 जुलाई 1991 के बाद से आर्थिक उदारीकण प्रारम्भ हुआ जो वित्तीय सुधारों को दर्शाता है। भारत में उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के प्रभाव न केवल आर्थिक क्षेत्र में ही पड़े बल्कि सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों पर भी पड़ा।

वैश्वीकरण क्या है

वैष्वीकरण एक व्यापक शब्दावली है जिसका प्रयोग कुछ ऐसे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृति, तकनीकी तथा राजनीतिक परिवर्तनों के जटिल समूह के लिए किया जा रहा है जिसके परिणाम स्वरूप विश्व स्तर पर दूर–दराज एवम् भिन्न–भिन्न स्थानो पर बैठे हुऐ व्यक्तियों, समूहो, कम्पनियों अथवा सरकारो के बीच अन्योन्याश्रित्ता, संघटन तथा अर्न्तसम्बन्ध काफी तीव्रता से बढ़ते जा रहे है। विश्व स्तर पर यह प्रक्रिया समय तथा स्थान की सिकुड़न की तरफ भी संकेत करती है। सकारात्मक दृष्टिकोण से वैश्वीकरण व्यापार एवम् वाणिज्य का इंजन माना जाता है जो विकासशील देशों में पूँजी को विकसित देशो से विकासशील देशो की तरफ हस्तान्तरित कर रहा है। इस विचार के अनुसार यह आर्थिक समृद्धि ही सामाजिक समृद्धि लायेगी। नकारात्मक दृष्टिकोण से वैश्वीकरण को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का साम्राज्यवाद माना जाता है। यह अविकसित एवम् विकासशील देशों में मानवीय अधिकारों का हनन कर रहा है तथा समृद्धि के नाम पर इनके प्राकृतिक संसाधनो को लूट रहा है। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के माध्यम से वैश्वीकरण सांस्कृतिक सहस्त्रीकरण करने का प्रयत्न कर रहा है तथा विकासशील देशो में कृतिम आवश्यकताओं का निर्यात करके वहाँ के स्थानीय समुदायों, पर्यावरण तथा संस्कृति का विनाश कर रहा है।

अतः वैश्वीकरण को हम कैसे परिभाषित करते है, यह प्रत्येक व्यक्ति के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि क्या वह वैश्वीकरण का समर्थक है या विरोधी।

बेलिज तथा स्मिथ के अनुसार ''वैश्वीकरण एक ऐसी ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो मानवीय सामाजिक संगठन के स्थानीक सौंपान के रूपान्तर में मौलिक बदलाव है जो दूर–दराज के समुदायों को जोड़ता है तथा शक्ति सम्बन्धों की पहुँच को क्षेत्रों तथा उपमहाद्वीपों के आर–पास फैला देता'' है। साम्यवाद के पतन के बाद वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग एकल विश्व अर्थव्यवस्था के लिए भी किया जाता है। कई बार इसका प्रयोग शीतयुद्ध के उपरांत अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीवादी व्यवस्था के बढ़ते हुए संघटन के लिए भी किया जाता है अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार वैश्वीकरण का अर्थ है ''विश्व स्तर पर वस्तुओं एवम् सेवाओं का सीमा पार लेन–देन की मात्रा एवंम् विविधता में बढौतरी, मुक्त अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी प्रवाह तथा टेक्नोलोजी के व्यापक एवम् तीव्र प्रसार के माध्यम से विभिन्न देशों की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई अन्योन्याश्रित्ता''। वैश्वीकरण का अर्थ व्यक्तियों एवम् कम्पनियों द्वारा दूसरे देशों के निवासियों के साथ ऐच्छिक आर्थिक लेन–देन आरम्भ करने की स्वतन्त्रता तथा योग्यता भी माना जाता है। इसे विकसीत देशो से विकासशील देशो की तरफ पूँजीवाद का प्रवाह भी माना जाता है। संक्षेप में, सभी परिभाषाऐं ये मान कर चलती है कि वैश्वीकरण के आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा तकनीकी पक्ष है जो आपस में जटिल तरीके से जुड़े हुए है। इन सबके बारे में हम धीरे–धीरे चर्चा करेगें।

वैश्वीकरण के चरण

वैश्वीकरण का प्रथम चरण

वैश्वीकरण से सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में कई परिवर्तन आए है इससे सांस्कृतिक और प्रौधोगिकी के क्षेत्रो में भी विकास देख सकते है। इस समय में युरोप को केन्द्र बनाकर जो – जो घटनाएँ हुई वे सब वैश्वीकरण की आरम्भिक प्रक्रिया है। देश – देश के बीच सुदृढ संबंध

हुए तथा अंतर्राष्ट्रीय गोष्टियों की संख्या बढ़ गयी। संसार का पहला अंतर्राष्ट्रीय N.G.O. (International Red Cross) सन् 1963 में स्थापित हुआ। राष्ट्रीय संस्थाओं की संख्या में भी वृद्धि हुई एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों का आरम्भ होने लगा। यातायात और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति आयी । उदाहरण के लिए तार और दूरभाष का आविष्कार सन् 1976 में हुए इसके बाद सन् 1908 में हवाई जहाज का आविष्कार हुआ। अंतर्राष्ट्रीय समाज में यूरोपियों को छोड़कर अन्य देशवासी भी भागीदार हुए। अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता एवं पुरस्कारें का आविष्कार हुआ। सन् 1916 के ओलिम्पिक्स प्रतियोगिता, सन् 1901 के नोबल पुरस्कार आदि इसका निदर्शन है। इसके अलावा आर्थिक क्षेत्र में भी कुछ परिवर्तन आये जिससे बहुराष्ट्रीय कारखानों का आविष्कार होने लगा। पाश्चात्य देशों से पूँजी का बहाव अन्य देशो में होने लगा।

वैश्वीकरण का दूसरा चरण

सन् 1920 से सन् 1960 तक का काल वैश्वीकरण के दूसरे चरण का है । इस समय कुछ प्रमुख घटनाएँ हुई सन् 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना इनमें एक है। उपनिवेशीकरण से मुक्त देशों की सदस्यता को स्वीकृती मिलने लगी। पश्चिमी दशो को छोड़कर अन्य देशों के स्वर भी मुखरित करने के लिए भी यह सहायक हो गया। मानवाधिकारो के लिए गठित संस्थओं को ज्यादा महत्व मिलने लगा। हिरोशिमा और नागासाकी में हुई बम वर्षा के बाद यह स्थिति हुई कि गुट निरपेक्ष राष्ट्रों का तथा तीसरे राष्ट्रों का, बड़े राष्ट्रों के विरूद्ध सम्मिलित होना भी वैश्वीकरण की प्रतिक्रिया थी।

वैश्वीकरण का तीसरा चरण

वैश्वीकरण के तीसरे चरण में यातायात के क्षेत्र में हुई उन्नति से देशों के बीच का संबंध सुदृढ हो गया। मानवाधिकार अंतर्राष्ट्रीय विषय बन गया। अंतर्राष्ट्रीय यातायात का बढ़ावा, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौता आदि के कारण विश्व के आर्थिक क्षेत्र में दबाव बढ़ गया। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का अंतर्राष्ट्रीय बाजार और शासन के क्षेत्र में प्रभाव बढ़ गया।

वैश्विकरण : भारतीय परिदृश्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था की नीति को चुना जिसके अंतर्गत सरकार ने विकास का मार्ग अपनाया । इसने कई बड़े उद्योग स्थापित किए और धीरे–धीरे निजी क्षेत्र को विकसित होने दिया बरसों तक भारत अपने निर्धारित लक्ष्य पाने में सक्षम नही हो सका। कल्याणकारी कार्यो के लिए भारत ने अन्य देशों से ऋण लिया। कुछ स्थितियों में सरकार ने लोगों के पैसे को भी मुक्तहस्त से खर्च किया। 1991 में भारत ऐसी स्थिति में पहुँच गया जिससे वह बाहर के अन्य देशो से ऋण लेने की विश्वनीयता खो बैठा। कई अन्य समस्याओं जैसे बढ़ती कीमतें, पर्याप्त पूँजी की कमी, धीमा विकास और प्रौद्योगिकी के पिछड़ेपन ने संकट को बढ़ा दिया। सरकारी खर्च आय से कही अधिक हो गया इसने भारत को भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को तेज करने तथा दो अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, विश्व बैंक और अंतर्राष्टरीय मुद्रा कोष के सुझाव के अनुसार अपने बाजार खोलने को विवश किया । सरकार द्वारा अपनाई गई रणनीति को नई आर्थिक नीति कहा जाता है। इस नीति के अंतर्गत कई गतिविधियों को, जो सरकारी क्षेत्र द्वारा ही की जाती थी, निजी क्षेत्र के लिए भी खोल दिया गया । निजी क्षेत्र को कई प्रतिबंधों से भी मुक्त कर दिया गया । उन्हें उद्योग प्रारम्भ करने तथा व्यापारिक गतिविधियां चलाने के लिए कई प्रकार की रियायतें भी दी गई। देश के बाहर से उद्योगपतियों एवं व्यापारियों को उत्पादन करने तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था, उद्योग, सक्षम, कल्याणकारी, मुक्त हस्त, विश्वसनीयता, प्राद्योगिकी, पूँजी, भूमण्डलीकरण,, गतिविधियॉ, उद्योगपतियों, व्यापारियों, वस्तुओं, अपना माल और सेवाए भारत में बेचने के लिए आमंत्रित किया गया। कई विदेशी वस्तुओं को जिन्हे पहले भारत में बेचने की अनुमति नही थी।

वैश्वीकरण की विशेषताए

1. उत्पादन तथा श्रम का मुक्त रूप से एक देश से दूसरे देश को आयात एवं निर्यात करना।
2. विदेशी निवेशकों एवं उद्योगपतियों को अपने नागरिकों की भाँति सुविधाएँ तथा सम्मान देना।
3. यह सीमाहीन विश्व है जिसमें पूँजी एवं श्रम को एक देश से दूसरे देश में लाने ले जाने की अनुमति होती है।
4. आधुनिकीकरण को बढ़ावा मिलता है।
5. अर्न्तराष्ट्रीय तथा बहुराष्ट्रीय (मल्टीनेशनल) की प्रक्रियाओं से पारस्परिक संबंध स्थापित करना।
6. अन्तराष्ट्रीय स्तर पर सूचना, ज्ञापन खबरों का आदान प्रदान करना।
7. उत्पादन का आधुनिकीकरण करना।
8. वस्तुओं का उत्पादन मांग एवं बाजार को ध्यान में रखकर करना।
9. एक दूसरे देश के साथ सुदृढ राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करना।
10. वैश्वीकरण आर्थिक, सामजिक, राजनीतिक एवं तकनीकि ताकतो का एक समायोजन है।
11. उत्पादन मुख्यतः निर्यात के लिए करना।
12. विचारों टैक्नोलॉजी का आदान प्रदान करना।
13. बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन करना तथा सेवाओं का आदान प्रदान करना।
14. श्रम और लोगों का एक देश से दुसरे देश को पलायन
15. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक तथा विश्व व्यापार संगठन के द्वारा नियंत्रित करना।

वैश्वीकरण के प्रमुख आयाम

आर्थिक आयाम

आज वैश्वीकरण का क्या अर्थ है? चालू सन्दर्भ में, आर्थिक रूप से बात करने पर इसका अर्थ है मूल्यों, उत्पादों, वेतनो, ब्याज दरें और लाभो का समांगीकरण जिससे विश्व में सभी बराबर हो जाएँ । मुक्त बाजार, पारदर्शिता और लचीलेपन के बहाने तथाकथित ''इलैक्ट्रोनिकी हर्ड'' में दशो में और देशो से बाहर विशाल पूँजी राशियाँ पाश्चात्य दशो के राजनीतिक और आर्थिक लाभ के लिए हस्तान्तरित होती है। जिससे विदेशी पूँजी

अर्जित हो तथा आज और कल की प्रौद्योगिकी का लाभ मिल सके ।

राजनीतिक आयाम

राजनीतिक शब्दो में, वैश्वीकरण का अर्थ है राष्ट्र–राज्य को इस तरीके से अभिलेखबद्ध (तमवतकमत) करना जो भूमण्डलीय एकता के अनुकूल हो। राष्ट्र राज्यो की संप्रभुता की उम्मीद भी भूमण्डलीय स्तर की संप्रभुता के पश्चात् की जाती है। एक भूमण्डलीय राज्य व्यवस्था ही वांछित लक्ष्य माना जा सकता है। विश्व के वैश्वीकरण की प्रक्रिया में राष्ट्र राज्य को हाशिए पर रखना सबसे बड़ी चुनौती है। विश्व का वैश्वीकरण विधियों और विनियमों की एक जटिल व्यवस्था द्वारा समर्थन प्राप्त है। अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) विश्व बैंक और अन्रू अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं (IFIs) के नियामक क्षेत्र, गेट (GATT) और विश्व व्यापार संगठन (TWO) नीतियों बाध्यताओ और प्रतिबन्धों को लागू करने के लिए तेजी से उभर रहे है। ये संस्थाएँ इस व्यवस्था को पूर्ण बनाने में राष्ट्र–राज्यो को आबद्ध करती है। इस प्रक्रिया का अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि राष्ट्रीय सरकारो पर अपने कानूनो को बदलने के लिए निरन्तर दबाव रहा है। जिससे ये भूमण्डलीय शासन की उभरती व्यवस्था में अधिक कारगर सिद्ध हो रही है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक अथवा विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाओं को कमजोर राष्ट्रो राज्यों की आपत्तियों पर भी ध्यान केन्द्रित करना होता है।

नई तकनीकियों का प्रचलन

वैश्वीकरण के फलस्वरूप भारतीय समाज में मध्यम वर्ग का उदय हुआ, जो शिक्षा पर सबसे अधिक ध्यान केन्द्रित करता है तथा खरीदारी पर बहुत अधिक जोर देता है।

भारतीय समाज में बहुत सी आधुनिकतम तकनीकों का आगमन हुआ, लेपटॉप, ऐयर कन्डीशनर, एप्पल के फोन लेकर घुमना आम बात हो गई ।

उपभोक्तावाद

शिक्षा बाजार केन्द्रित हो गई पढ़ने का उद्देश्य पैसे कमाना हो गया। सभी चीजें बाजार केन्द्रित हो गई । नये नये उद्योग शुरू करने की कठिनाईयॉ दूर हो गई। बड़ी–बडी मशीनो को खरीदना आसान हो गया । जैसे ऐयरटेल, एचडीएफसी, फिल्पिकार्ट, पेटीएम इत्यादि कम्पनियाँ अस्तित्व में आई ।

सांस्कृतिक वैश्वीकरण

भारत की स्थानीय संस्कृति विशिष्ट है जिसे वैश्वीकरण ने प्रभावित किया है भारतीय मानव शास्त्री सर्वेक्षण में भारत के लोग प्रोजेक्ट के माध्यम से स्थानीय संस्कृति के तथ्य जुटाये है और यह तथ्य स्थापित किया कि भारतीय समाज बहुलवादी है इसे विविधता में एकता के रूप मे देखा जा सकता है, जो स्थानीय संस्कृति की पहचान है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया अनेक भाषाओं, सांस्कृतिक क्षेत्र बहुधर्मा, बहु जातीय और आदिवासी संस्कृति की विशिष्टताओं को प्रभावित कर रही है।

वैश्वीकरण और लोकतंत्र

वैश्वीकरण से जन चेतना बढ़ी है। लोकतंत्र बहुत अधिक प्रभावी हो रहा है। उत्पीडित और पिछड़ी जनता अपनी बदहाली के प्रति अधिक जागरूक हुई है । लेकिन राष्ट्रों की राजनीति में विश्व बैंक विश्व व्यापार संगठन आदि राष्ट्रीय संरक्षणों रचनाओं का वर्चस्व बढ़ा है। जिससे विकासशील देशों में प्रजांतत्र का अस्तित्व न्यूनाधिक मात्रा में खतरे में है। भारत का पारम्परिक अभिजन नेतृत्व भारत की आम जनता की अवहेलना करता है और राष्ट्रातीत संगठनो में वर्चस्व से भारत राष्ट्र के अधिकारों की चिन्ता भी नही कर रहा । राष्ट्र की सफलता के तीन तत्व है। 1. अलग पहचान, 2. वैधता, 3. अपनी सुरक्षा व्यवस्था। वैश्वीकरण से इन तीनों तत्वों को क्षति पहुँच रही है। राष्ट्रातीत संगठनों का प्रभाव बढ़ने से स्वतंत्र लोकतान्त्रिक निर्णय लेने में बाधा आ रही है। राष्ट्रों की वैधता और गरिमा खो रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी अनुसंधान का प्रमुख उद्देष्य एक नई खोज करना होता है वी0एच0 मौर्य के अनुसार अनुसंधान नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया गया व्यवस्थित प्रयास है। इस विषय को लेने का मेरा अहम मकसद यह है कि उदारीकरण एवं वैष्वीकरण से क्या वास्तव में हमारी आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक व्यवस्था सुदृढ हुई है या फिर कही ऐसा तो नही है कि हम मुक्त व्यापार की व्यवस्था की आड़ मे कही दास्ता को तो बढ़ाया नही दे रहे है। यह विषय लेने का मेरा दूसरा उद्देष्य यह है कि कही उदारीकरण और वैश्वीकरण ने पूरी तरह से राजनैतिक चोला तो नही पहन लिया । इसके अलावा कुछ अन्य उद्देश्य भी है जैसे इस व्यवस्था के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावो का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

''रमन कुमार देव 2005'' ने अपनी पुस्तक ''वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था,'' राजकमल प्रकाशन में उदारीकरण और वैश्वीकरण के आर्थिक पक्ष पर प्रभावों का विस्तृत वर्णन किया है। क्या उदारीकरण और वैश्वीकरण अवधारणा भारतीय अर्थ व्यवस्था को सबल बनाने के क्षेत्र में एक सकारात्मक पहलू है।

''श्री सच्चिदानन्द सिन्हा 2012'' ने अपनी पुस्तक ''भूमंडलीकरण की चुनौतियों की भूमिका सामयिक प्रकाशन'' में लिखा है कि, ''सारे संसार के मंगल के लिए जुड़ जाएगें, लेकिन भूमंडलीकरण का अर्थ ठीक इससे उल्टा है पर क्या यह वैसा स्वराज्य का हवाला देते हुऐ अपनी कल्पना का ''गाँच'' कहा समस्या का समाधान है जिसका क्षेत्र समस्त भूमण्डल है।''

''पी0के0 अग्रवाल 2018'' ने अपनी पुस्तक ''निबन्ध महासागर'' प्रभात प्रकाशन में लिखा है कि सामान्य तौर पर भूमण्डलीयकरण या वैश्वीकरण का अर्थ सम्पूर्ण विश्व और कल और आज के भूमण्डलीकरण में क्या अन्तर है के बारे में विस्तार से वर्णित किया है।

''बैरी ऐकहैंगरीन 2008'' ने अपनी पुस्तक ग्लोबल कैपीटल प्रिसंटॉन यूनिवसर्टी प्रेम में लिखा है कि पूरी दूनिया की अर्थव्यवस्था आपस में जुड़ी हुई है विश्व की अर्थ व्यवस्था के आपस में इस जुड़ाव को वैश्वीकरण या ग्लोबलाईजेशन कहते है। एक देश की अर्थव्यवस्था में अगर उथल पुथल होती है तो दूसरे देश की अर्थव्यवस्था पर भी इसका प्रभाव पड़ता है।

''वासू 2009'' ने अपनी पुस्तक ''इम्पेक्ट ऑफ ग्लोबलाईजेशन एण्ड लिब्रलाईजेशन'' अभीजीत पब्लिकेशन में लिखा है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार ने आधुनिक दूनिया का रूप ले लिया है। इस पुस्तक में लेखक ने बताया है कि किस तरह कुछ देश क्यो अमीर है और बाकी क्यो गरीब है।

आर0सी0 वरमानी 2007'' ने अपनी पुस्तक वैश्वीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध गीताजंली पब्लिकेशनस में लिखा है' कि यह विश्व दिन प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। हालांकि इसका अभिप्राय लाक्षिणक है, भौगोलिक नहीं एक लेखक ने वर्तमान विश्व को ''वैश्विक गांव'' का नाम दिया है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप वृहत तथा सूक्ष्म सामाजिक संबंधों में ही परिवर्तन आ गया है।

''सुभाष धूलिया 2001 प्रस्तावना'' संचार क्रांति का राजनीति और विचाराधारा ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली सोवियत संघ के विघटन के साथ ही पूँजीवादी देशों के हौसले बढ़ गये क्योंकि अब मार्ग की सभी बाधायें समाप्त हो गई। सोवियत संघ के विघटन के साथ ही नव–उपनिवेशवादी विचाराधारा को कई गुना तेजी से लागू किया गया । भारत में भूमण्डलीकरण की नींव 80 के दशक में रखी जाने लगी थी। परन्तु इसके एक अनिवार्य शर्त बन जाने के पीछे कुछ आर्थिक कारण भी थे।

बिजेन्द्र कुमार 3.7.2001 जनसत्ता ''भूमंडलीकरण के दूष्परिणाम'' हिन्दी पत्रकारिता और भूमण्डलीकरण, नटराज प्रकाशन नई दिल्ली, वैश्वीकरण की नीतियों के अंतर्गत भारत में विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया गया परन्तु यह विदेशी निवेश विशुद्ध रूप से मुनाफा कमाने के लिए किया गया और किया जा रहा हैं इस विदेश निवेश का भारत में रोजगार बढ़ाने या उत्पादकता बढ़ाने का कोई इरादा नहीं है। यह मूल रूप से विदेशी है और भारत सिर्फ एक चारागाह है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण में विकासशील देश के साथ–साथ बड़ी आबादी को रोजगार के लिए सस्ती कीमत वाले उत्पादों और समग्र आर्थिक लाभो की विविधता ला दी है। हालांकि, इसने प्रतिस्पर्धा, अपराध, राष्ट्र विरोधी गतिविधियों, आंतकवाद आदि को जन्म दिया है। इसलिए यह सकारात्मक के साथ साथ नकारात्मक असर भी लेकर आया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *ओझा बी.बी. 2016, दूरसंचार एवं प्राद्योगिक, प्रभात प्रकाशक।*
2. *अपादोरई 1981, इण्डियाज फॉरन पॉलेसी, न्यू देहली ऑ। ऑक्सफोहड यूनिवसर्टी प्रेस*
3. *दुबे, अभय कुमार (संपा), भारत का भूमंडलीकरण, वाणी प्रकाशन, (2003) दिल्ली।*
4. *डॉगी वन्दना 2012, भारतीय अर्थ व्यवस्था' बदलते स्वरूप, प्रभात पब्लिकेशनस।*
5. *देव रमन कुमार (2005) पुस्तक वैश्वीकरण और भारतीय अर्थ व्यवस्था गीतांजली प्रकाशन*
6. *नीलेकानि नन्दन (2018) उभरते भारत की तस्वीर, प्रभात पब्लिकेशनस।*
7. *सिन्हा सच्चिादानन्दा (2012) पुस्तक भूमण्डलीकरण । नटराज प्रकाशन।*
8. *वरमानी आर.सी (2003) भारत में उपनिवेशवाद तथा राष्ट्रवाद गीताजंली पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।*
9. *वरमानी आर.सी. (2006) सिटिजनशिप इन ए ग्लोबलाईज्ड़ वर्ल्ड गीताजंली पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली*
10. *वरमानी आर.सी.(2007) ग्लोबलाईजेशन एण्ड इंटरनेशनल रिलेशन थ्यौरी ऑक्सफॉडः ओ.यू.पी.*